[The Vice-Chairman, (Shri Triloki Nath Chaturvedi), in the Chair.]

have been feeling that somehow or the other the investigative agencies are perhaps not doing what is expected from them. In the Hawala case, there was so much of drum beating, so much of talk, so much of discussion in the last three or four years. Now we find that the whole case has been put into a shambles. The chargesheets have not been properly prepared and the court is saying that they will not be going by only one documentary evidence, there is not enough of corroborative evidence. If this is the state of investigation, how can you go to find out what is acutally happening, how can you bring the criminals to book?

On Bofors, I think, we had given a promise that sometime in April or May, the report would be given to the nation about the present state of the case. Now, it is July. A lot of material has arrived from Geneva. The boxes had been shown by the delegation. We all know a lot of material is there, lots of issues are to be resolved. We were told that within one month somebody in the CBI would go through it and would come out with a report and perhaps we will be able to name them. Unfortunately so far we have not received any report from CBI. The Director of CBI himself has been transfered. In such a situation, all the investigations have really been reduced to nothing Nothing much is coming out. I am also worried not only about corruption, but also about all kinds of cover-ups. We have seen a recent case where a Chief Minister has been replaced by his wife who will be sitting there working in that scat until the same old man comes back. If this is the way the things are functioning, how could wc have any respect for justice, respect for investigation and the agencies which arc conducting them? What I am suggesting is that there has to be a proper thinking on the part of the Government lo come out with clear assurance that important issues like the Hawala, Bofors, would be periodically discussed and the report would be given to the Parliament so that every three months or four months we know the present status of the case and we in Parliament are in a position to raise these issues which would be in the public interest. Thank you.

RE: DEMORALISATION OF PUNJAB STATE POLICE AND REVIVAL OF MILITANCY IN PUNJAB

श्री वीरेन्द्र कटारिया (पंजाब) : वाइस चेयरमैन साहब, श्री इन्द्र कुमार गुजराल हमारे प्रधान मंत्री जी ने पंजाब का 8500 करोड़ रुपये का कर्जा पिछले दिनों मुआफ किया था और उन्होंने इस मौके पर कहा था कि,क्योंकि पंजाब ने देश की अखंडता की लड़ाई लडी थी इसलिए इस बोझे को पंजाब क्यों उठाए, सारा देश उठायेगा । हम उनकी तारीफ करते हैं कि उन्होंने बहुत अच्छा कदम उठाया लेकिन पंजाब में जिन लोगों ने आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई लडी थी, अपनी जाने कुर्बान की थी, आज वे बड़े डीमारेलाइज्ड पोज़ीशन में है । पंजाब में 30 हजार लोग आतंकवाद की नज़र हुए । 18,000 पुलिस वाले अपनी फैमिलीज़ के साथ कुर्बान हुए और जब पंजाब में अमन आया, हिन्दुस्तान की अखंडता की लड़ाई लोगों ने लड़ कर जीत ली तो ऐसी डीमारेलाइज़ेशन लोगो में आई कि उसकी एक निशानी तरनतारन के एस0 एस0 पी0 अजीत सिंह सिद्ध ने खुदकशी करके जलील होने के बजाय, हयूमिलिएट होने के बजाय जेल में उन टैरोरिस्टो के साथ रहने की बजाय जिनके साथ उनहोनेण लड़ाई की थी, उन्होंने अपनी जान को कुर्बान करना बेहतर समझा । मुझे अजीत सिंह सिद्धू के बारे में कोई उनकी वकालत नही करनी । लेकिन जो कौमें अपने हीरोज़ को भूल जाती है, जो कौमें उन लोगों को भूल जाती है जो दूसरें के लिए जाने कुर्बान करते है और अपने देश के लिए लड़ते है तो फिर कौन मुश्किल वक्त में किसी दूसरे आदमी के लिए लड़ेगा और देश के लिए अपनी कुर्बानी देगा? उस वक्त पंजाब के जो हालात थे हो सकता है उन पुलिस आफिसरों ने ऐसे मीन्ज़ अख्तियार किए हो जो पुलिस के मैनुअल से शायद न हो, लेकिन जिन हालात में उन्होंने वह लड़ाई लडी उसको आपको याद रखना चाहिए । पंजाब में उस वक्त टैरोरिज़म का एब्सोल्यूटली राज था । सिविल एडमिनिस्ट्रेशन टोटली कोलैप्स हो चुकी थी, जुडीशियर्स अपने फरायज को सरअंजाम देने में कतई तौर पर नाकाम हो चुकी थी । प्रैस वाले आतंकवादियों की

डिक्टेट से अपने मज़मून और खबरें लिखा करते थे और जो अखबार वाला उनके इशारे पर नही चलता था उनको लाला-जगत नारायण की तरह और रमेश चन्द्र की तरह गोलियों से उड़ा कर उनकी आवाज़ को बंद कर दिया जाता था। उस वक्त देश में पाकिस्तान की तरफ से टैरोरिज़म फैला कर लो इंटेंसिटी वार को जारी करके, प्रोक्सी वार को जारी करके एक वार लाइक सिचुएशन थी। उस वॉर लाइक सिचुएशन में गलतियां भी हो सकती है, एक्सैसेज़ भी हो सकती है, लेकिन किसी आदमी को बुरा कहने से पहले, उनको सज़ा देने से पहले, उनको हयूमिलिएट करने से पहले इस बात को देखना चाहिए कि उन्होंने जो लड़ाई लडी देश के लिए देश के लोगों के लिए, पंजाब को आतंकवाद से छुटकारा दिलाने के लिए लडी। उसकी बैकग्राउंड क्या थी। यह सब देख कर तब उनकी किस्मत का फैसला करना चाहिए । तरनतारन उस वक्त टैरोरिज़म का एक गढ़ था और आपको मैं यह बताना चाहता हूं कि झुंड के झुंड ...(**व्यवधान**)...

उपसभाध्यक्ष (श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी) : अब आप समाप्त कीजिए, आपने अपना प्वायंट मेड पर दिया।

श्री वीरेन्द्र कटारिया : देखिए बस दो मिनट, मैं आपसे यह चाहता हूं कि उस वक्त तरनतारन आतंकवाद का गढ़ था और अगर तरनतारन पंजाब के हाथ से निकल जाता तो पंजाब का हिन्दुस्तान से निकलना इनएवीटेबल था और उसके बाद काश्मीर का भी यही हशर होता। जिन लोगों ने इस बैकग्राउंड में प्रोक्सी वार के खिलाफ लड़ाई लडी थी, उन लोगों को अगर आज हम डीमारेलाइज कर देंगे तो वे हमारे मुश्किल वक्त में क्या काम आयेंगे? मैं आपको कहना चाहता हूं कि इस पुलिस फोर्स में डीमॉरेलाइज़ेशन की वजह से आज पंजाब में पुलिस बहुत डिमॉरेलाइज़ है और इसकी वजह से आज पंजाब में फिर आतंकवाद के वाकयात हो रहे है। आज पठानकोट में बम फटता है, भटिंडा की ट्रेन में बम फटता है, बाधापुराना में लोगों को गोलियों से उड़ा दिया जाता है। फिरोजपुर में लोगों को गोलियों से उड़ा दिया जाता है, मैं किसी सरकार को, आज की सरकार को दोष नही देना चाहता जो पंजाब की है, लेकिन यह कहे बगैर मैं नही रह सकता कि जो डीमॉरेलाइजेशन पंजाब की पुलिस में आई है उसका यह डाइरेक्ट नतीजा है कि ....। पंजाब के अंदर फिर से मिलिटेंसी रिवाइव होने की बात हो रही है। मैं आप के माध्यम से हिन्दुस्तान की सरकार से यह कहना चाहता हूं कि लॉ को अमेंड किया जाए। जो लोग करप्ट है, जिन लोगों ने ज्यादतियां की है, उन को सजा दी जाए। ऐसे भी लोग थे जो कि 10 साल जब आतंकवाद चल रहा था तो कभी नजर नही आए। लोग मर रहे थे और वह अपने एअर कंडीशंड ड्राइंग रूम में बैठकर इंटैलेकुअल बातें करते थे जबकि लोग गोलियों का शिकार हो रहे थे। जिन लोगों ने उस वक्त लोगों की मदद की उनको जब आतंकवाद की जंग में वे हार गए तो सिविल ह्यूमन राइटस का बहाना बनाकर आज निशाना बनाया जा रहा है । तो देश को इस बात को बर्दास्त नही करना चाहिए इस सिचुएशन को देखकर उन की मदद करने के लिए मैं सरकार से यह कहना चाहता हूं कि ऐसे बहादुर लोगों की मदद करने के लिए लॉ को अमेंड कर के कोई-न-कोई तरीका निकालना चाहिए।

मैं यह भी कहना चाहता हूं कि जिन लोगों ने आतंकवाद में हिस्सा लिया, आज पंजाब में कुछ लोगों को कॉपरेशन का चैयरमेन बनाने की बात चल रही है ।...(**व्यवधान**)...

†**شری ویریندر کٹاریہ "پنجاب":** وائس چیئر مین صاحب۔ شری اندر کمار گجرال ہمارے پردھان منتری جی نے پنجات کا ۸۵۰۰۰ کروڑ روپے کا قرضہ پچھلے دنوں معاف کیا تھا اور انھوں نے اس موقع پر کہا تھا کہ کیوں نکہ پنجاب نے دیش کی اکھنڈتا کی لڑائی لڑی تھی۔ اسلئے اس بوجھے کو پنجاب کیوں اٹھائے۔ سارا دیش اٹھائے گا۔ ہم اتنی تعریف کرتے ہیں کہ انھوں نے بہت اچھا قدم اٹھایا۔ لیکن پنجاب میں جن لوگوں نے آتنک واد کے خلاف لڑائی لڑی تھی اپنی جانیں قربان کی تھیں آج وہ بڑے "ڈی مورلائزیشن" پوزیشن میں ہیں۔ پنجاب میں ۳۰ ہزار لوگ آتنک واد کی نظر ہوئے۔ ۱۸۰۰۰

کو لپس ہو چکی تھی، جوڈینری اپنے فرائض کو سرانجام دینے میں قطعی طور پر نا کام ہو چکی تھی۔ پریس والے آتنکوادیوں کی ڈکیٹٹ سے اپنے مضمون او ر خبریں رکھا کرتے تھے۔ اور جو اخبار والا انکے اشارے پر نہیں چلتا تھا انکو لالا جگت نارائن کی طرح اور رمیش چندر کی طرح گولیوں سے اڑا کر انکی آواز کو بند کر دیا جاتا تھا۔ اس وقت دیش میں پاکستان کی طرف سے ٹیرورزم پھیلا کر "لو انٹینسیٹی وار" کو جاری کر کے، "پروکسی وار" کو جاری کر کے ایک "وار لائن سچوایشن" تھی۔ اس وار لائن سچوایشن میں غلطیاں بھی ہو سکتی ہیں۔ "ایکسسز" بھی ہو سکتی ہیں لیکن کسی آدمی کو برا کہنے سے پہلے ، انکو سزا دینے سے پہلے، انکو "ہومیولیٹ" کرنے سے پہلے اس بات کو دیکھنا چاہئے کہ انھوں نے جو لڑائی لڑی دیش کیلئے، دیش کے لوگوں کیلئے۔ پنجاب کو آتنکواد سے چھٹکارا دلا نے کیلئے لڑی۔ اسکی "بیک گراؤنڈ" کیا تھی یہ سب دیکھکر تب انکی قسمت کا فیصلہ کرنا چاہئے "ترن تارن" اسوقت ٹیرورزم کا ایک گڑھ تھا۔ اور آپکو میں یہ بتانا چاہتا ہوں کے جھنڈ کے جھنڈ..."مداخلت"...

اپادھیکش "شری ترلوکی ناتھ چترویدی":

s

.

پولیس والے اپنی فیملیز کے ساتھ قربان ہوئے اور جب پنجاب میں امن آیا۔ ہندوستان کی اکھنڈتا کی لڑائی لوگوں نے لڑ کر جیت لی تو ایسی" ڈی مورلائزیشن " لوگوں میں آئی کہ اسکی ایک نشانی "ترن تارن" کے ایس۔ ایس۔ پی۔ اجیت سنکھ سدو نے خودکشی کر کے ذلیل ہونے کی بجائے ، "ہیوملیٹ" ہو نے کے بجائے جیل میں ان ٹیرو رستوں کے ساتھ رہنے کے بجائے جنکے ساتھ انھوں نے لڑائی کی تھی انھوں نے اپنی جان کو قربان کرنا بہتر سمجھا۔ مجھے اجیت سنکھ سدد کے بارے میں کوئی انکی وکالت نہیں کرنی لیکن جو قو میں اپنے ہیروز کو بھول جاتی ہیں۔ جو قومیں ان لوگوں کو بھول جاتی ہیں جو دوسروں کیلئے جانیں قربان کرتے ہیں اور اپنے دیش کیلئے لڑتے ہیں تو پھر کون مشکل وقت ہیں کسی دوسرے آدمی کے لئے لڑے گا۔ اور دیش کیلئے اپنی قربانی دے گا۔ اس وقت پنجاب کے جو حالات تھے ہو سکتا ہے ان پولیس افسروں نے ایسے "مینز" اختیار کئے ہوں جو پولیس کے "منیوول " میں نہ ہوں لیکن جن حالات میں انھوں نے وہ لڑائی لڑی اسکو آپکو یاد رکھنا چاہئے۔ پنجاب میں اسوقت " ٹیرورزم" کا "ابسولوٹی" راج تھا۔ سیول ایڈ منسٹریشن ٹوٹلی

پنجاب کے اندر پھر سے ملیٹینسی ریواؤ ہونے کی بات ہو رہی ہے۔ میں آپکے مادھیم سے ھندوستان کی سرکار سے یہ کہنا چاہتا ہوں کی لا کو امینڈ کیا جائے۔ جو لوگ کرپٹ ہیں، جن لوگوں نے زیادتیاں کی ہیں، انکو سزا دی جائے۔ ایسے بھی لوگ تھے جبکہ دس سال جب آتنکواد چل رہا تھا تو کبھی نظر نہیں آئے۔ لوگ مر رہے تھے اور وہ اپنے "ایئر کنڈیشننگ ڈرا ئنگ روم" میں بیٹھ کر انٹیلچرل باتیں کرتے تھے۔ جبکہ لوگ گولیوں کا شکار ہو رہے تھے جن لوگوں نے اسوقت لوگوں کی مدد کی انکو جب آتنکواد کی جنگ میں وہ ہار گئے تو سول ہیومن رائٹس کا بہانہ بناکر نشانہ بنایا جا رہا ہے۔ تو دیش کو اس بات کو برداشت نہیں کرنا چاہئے۔ اس سچوایشن کو دیکھکر انکی مدد کرنے کیلئے میں سرکار سے یہ کہنا چاہتا ہوں کہ ایسے بہادر لوگوں کی مدد کرنے کے لئے لاگو امنڈکر کے کوئی نہ کوئی طریقہ نکالنا چاہئے۔

میں یہ بھی کہنا چاہتا ہوں کہ جن لوگوں نے آتنک واد میں حصہ لیا۔آج پنجاب میں کچھ لوگوں کو کارپوریشن کا چیئرمین بنانے کی بات چل رہی ہے۔

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI TRILOKI NATH CHATURVEDI): I think you have made your point very

اب آپ سماپت کیجئے۔آپنے اپنا پوائنٹ "میڈ" کر دیا۔

شری ویریندر کٹاریہ: دیکھئے بس دو منٹ ۔ میں آپسے کہنا چاہتا ہوں کہ اسوقت ترن تارن آتنکواد کا گڑھ تھا اور اگر ترن تارن پنجاب کے ہاتھ سے نکل جاتا تو پنجاب کا ھندوستان سے نکلنا "ان ایویٹیبل" تھا اور اسکے بعد کشمیر کا بھی یہی حشر ہوتا۔ جن لوگوں نے اس بیک گراؤنڈ میں "پراکسی وار" کے خلاف ٹرائی لڑائی لڑی تھی ان لوگوں کو اگر آج ہم "ڈی مورلائز" کر دینگے تو وہ ہمارے مشکل وقت میں کیا کام آئینگے۔ میں آپ سے کہنا چاہتا ہو کہ اس پولیس فورس میں "ڈی مورلائزیشنس" کی وجہ سے آج پنجاب میں پولیس بہت "ڈی مورلائز" ہے اور اسکی وجہ سے آج پنجاب میں پھر آتنک واد کا واقعات ہو رہے ہیں۔آج "پٹھان کوٹ" میں بم پھٹتا ہے، بھٹینڈا کی ٹرین میں بم پھٹتا ہے، واگھہ پرانا میں لوگوں کو گولیوں سے اڑا دیا جاتا ہے، فروزپور میں لوگوں کو گولیوں سے اڑا دیا جاتا ہے، میں کسی سرکار کو دوش نہیں دینا چاہتا جو پنجاب کی ہے، لیکن یہ کہے بغیر میں رہ نہیں سکتا کہ جو ڈی مورلائزیشن پنجاب کی پولیس میں آئی ہے اسکا یہ ڈائریکٹ نتیجہ ہے کہ

effectively. We should not go into other matters. You have drawn attention to the issue. We should not go into the question of who is being appointed or who is not. ...*(Interruptions)*... You are a very senior Member. ...*(Interruptions)*... Please conclude. ...*(Interruptions)*...

SHRI VIRENDRA KATARIA: I would conclude by saying that we should not forget those people who have sac-rified their lives, lives of their family members and those who performed and discharged their lawful duty. They have fought a war of our country. This is of paramount importance that they were not fighting just to restore peace in Tarantarn or in the State as a whole, but they were fighting a war for the country. So, we must see it in that perspective and try to save our brave people. Otherwise, the nations who forget their heroes, they do not find any place in the history of the world. They go into the abysmal depth of history. I again request that the nation should take care of them. Thank you.

PROF. VIJAY KUMAR MALHOTRA (Delhi): Sir, I just to associate myself with the sentiments expressed by the hon. Member. ...*(Interruptions)*...

महोदय, मैं सिर्फ एसोशिएट करना चाहता हूं । महोदय पंजाब में फिर से आतंकवाद आ रहा है तब पुलिस को डिमॉरेलाइज नही करना चाहिए । जहां एक भी आतंकवादी को सजा नही हुई और हजारों पुलिस वाले जेल में है । महोदय, मैं बीरेन्द्र कटारिया जी के साथ अपने को एसोशिएट करता हूं ।

उपसभाध्यक्ष (श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी) : धन्यवाद ।

कल्याण मंत्री (श्री बलवन्त सिंह रामूवालिया) : सर, ऑनरेबल मेंबर जो कह रहे हैं कि कुछ ऐसे लोगों ने जिन्होंने आतंकवादियों को पनाह दी है उनको चैयरमेन लगाया जा रहा है । अगर आप के पास किसी का नाम है कि किस को लगाया जा रहा है, नही लगाया जा रहा है **...(व्यवधान)...**

PROF. VIJAY KUMAR MALHOTRA (Delhi): You should not take up this case like this. ...*(Interruptions)*... You are a Minister. ...*Interruptions)*...

उपसभाध्यक्ष (श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी) : अगर वह होगा तो वह सरकार को भी इत्तला करेंगे । जनता को भी इत्तला करेंगे । ऐसी चीजें कोई पर्दे के पीछे तो नही हुआ करती है ।

RE. UNDUE RESTRICTIONS BY THE WEST ON INDIA'S TRADE

DR. Y. RADHAKRISHNA MURTY (Andhra Pradesh): Sir, our count-try is saturated with problems—political, administrative, social, economic and ethical. In spite of our differences in perception, all of us have been grappling with those problems inside the country. Sir, we are facing problems created not only by our hostile neighbours but we are also facing problems created by those countries which are supposed to be our friends, \ iich are supposed to be our benefactors and which are supposed to be our global partners. Today this is the subject of my submission.

Sir, we are pound of our achievements and we are proud of our scientists who have made our achievements possible in space technology and in nuclear and missile programmes. Let us recall the treacherous embargo on our acquiring croygenic engine from Russia for our space programme. It was intended to cap our Prithvi programme and stall our Agni launching though both are supposed to vegetarians!...In a sense they are not very harmful when compared to our neighbour's missile. In 1980"s the U.S. did not permit the sale of its advanced CRAY-X super computer to India for use in weath-jer forecast. Our scientists have taken up 'the challenge and made the Cryogenic Engine and the Super Computer. The same is the story about the nuclear power plants also. During the last few weeks, restrictions were placed on American Exports to Indian companies—both private and public—on the plea that they arc suppprting nuclear proliferation activities in India. The companies include both private and public sector companies-